अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं – जैन धर्म भूषण (परीक्षा 24 जुलाई, 2016)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. किसी भी प्रकार की नकल नहीं करें एवं किसी से बातचीत का भी प्रयास नहीं करें। इसके अंक काटे जा सकते हैं अथवा परीक्षा निरस्त की जा सकती है।
5. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
6. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	कुल योग
प्राप्तांक						
पूर्णांक	10	10	10	28	42	100
पुनः जाँच						

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) संसार के सारे जीव कितने विभागों में विभक्त किये गये हैं-

(क) 6 (ख) 7

(ग) 8 (घ) 9 ( )

(b) 'नेव अइवाइज्जा' का अर्थ है-

(क) नहीं बोलूंगा (ख) हनन नहीं करूंगा

(ग) सेवन नहीं करूंगा (घ) ग्रहण नहीं करूंगा ( )

(c) टिड्डी त्रस जीव है -

(क) स्वेदज (ख) उद्भिज

(ग) रसज (घ) अण्डज ( )

(d) 'जीवाभिगम' सूत्र की किस प्रतिप्रत्ति के द्वितीय वैमानिकोद्देशक के प्रमाण से नवग्रैवेयक में 3 दृष्टि मानी गई है -

(क) प्रथम (ख) द्वितीय

(ग) तृतीय (घ) चतुर्थ ( )

(e) सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में शरीर पाये जाते हैं -

(क) 3 (ख) 5

(ग) 2 (घ) 4 ( )

(f) असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय के अपर्याप्ता में उपयोग पाये जाते हैं -

(क) 4 (ख) 5

(ग) 6 (घ) 3 ( )

(g) निस्वार्थ सेवा से नष्ट होता है-

(क) क्रोध (ख) मान

(ग) माया (घ) लोभ ( )

(h) आर्य सुधर्मा स्वामी द्वारा कितनी गाथाओं में वीर-प्रभु की स्तुति की गई हैं-

(क) 29 (ख) 26

(ग) 2 (घ) 1 ( )

(i) तीन काण्ड या विभाग हैं-

(क) सुमेरू पर्वत के (ख) पंडक वन के

(ग) नंदनवन के (घ) रूचक पर्वत के ( )

(j) सम्यग्दृष्टि मनुष्य वैमानिक का ही आयुष्य बंध करता है, यह धारणा प्रतिपादक आगम है -

(क) सुखविपाक सूत्र (ख) दशवैकालिक सूत्र

(ग) भगवती सूत्र (घ) आचारांग सूत्र ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) 'आवीलिज्जा' का अर्थ 'बार-बार झटके नहीं' है। ( )

(b) आश्रव द्वार को बन्द कर देने वाला जितेन्द्रिय आत्मा को पाप कर्मों का बन्ध नहीं होता है। ( )

(c) धन, धान्य, पुत्र एवं मित्रादि बाह्य संयोग नहीं हैं। ( )

(d) परिगृहीता देवियों की उत्कृष्ट स्थिति 50 पल्योपम है। ( )

(e) सभी युगलिक छहों दिशा से 288 भेदों का आहार लेते हैं। ( )

(f) अप्रत्याख्यानावरण क्रोध संवत्सरी आदि पर्वों पर ही उपशान्त होता है। ( )

(g) 'पुट्ठे' इस पद का अर्थ स्पर्श किया हुआ है। ( )

(h) वलयाकार पर्वतों में निषध पर्वत श्रेष्ठ है। ( )

(i) भगवती सूत्र शतक 6 उद्देशक 5 के अनुसार नव लोकांतिक देवों की स्थिति जघन्य 8 सागरोपम है। ( )

(j) तीर्थंकर चरित्र में भगवान् ऋषभदेव के 13 भवों का वर्णन मिलता है। ( )

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a) हम पसीने में उत्पन्न होने वाले जूँ-लीखादि जीव कहलाते हैं। .....

(b) मुझको किंपाक फल की उपमा दी गई है। .....

(c) मैं ज्ञानपूर्वक होने पर ही लाभकारी होता हूँ। .....

(d) मुझमें नील लेश्या पाई जाती है। .....

(e) मेरी उत्कृष्ट स्थिति 10 हजार वर्ष की है। .....

(f) मेरी उत्कृष्ट अवगाहना प्रत्येक धनुष की है। .....

(g) मैं समस्त दुःखों की जननी हूँ। .....

(h) मैं आयताकार पर्वतों में सर्वश्रेष्ठ पर्वत हूँ। .....

(i) मैं योद्धाओं में प्रधान हूँ। .....

(j) मेरा फल क्षायिक सम्यक्त्व है। .....

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में लिखिए **14x2 = (28)**

(a) तवोगुणपहाणस्स उज्जुमइ, खंतिसंजमरयस्स।
परिसहे जिणंतस्स, सुलहा सुगइ तारिसगस्स।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

(b) तृतीय महाव्रत में मुनि के लिए कौनसे छः प्रकार के अदत्त ग्रहण करने योग्य नहीं हैं?

.....

.....

(c) निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-

सिलागहत्थेणं-..... इच्चेसिं-.....

सामण्णं-..... पडिवज्जइ-.....

(d) नारकी के एक दण्डक में कौन-कौनसी लेश्या पायी जाती हैं?

.....

.....

(e) तीन विकलेन्द्रिय एवं असन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय की अवगाहना लिखिए।

.....

.....

(f) दण्डक की अपेक्षा युगलिकों की गति-आगति लिखिए।

.....

.....

(g) जहा लाहो तहा लोहो, लाहा लोहो पवड्ढइ।
दो मास कयं कज्जं, कोडीए वि न निट्ठियं।। निम्न गाथा का अर्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(h) माया विजय के कोई दो उपाय लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(i) से वीरिएणं ..... णेगगुणोववेए। निम्न गाथा को पूर्ण कीजिए।

.....

.....

.....

.....

(j) **अणुत्तरग्गं ..... य दंसणेणं। निम्न गाथा को पूर्ण कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(k) **निम्न शब्दों के अर्थ लिखिए-**

पडियच्च-..... **अणवज्जं-.....**

णेया-..... **अणाऊ-.....**

(l) **दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु वा अणवज्जं वयंति।**
तेवसु वा उत्तमं बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

(m) **प्रमुख आराधना लिखते हुए श्रुतपरम्परा के अनुसार आराधक का अर्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **मध्यम ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना वाले कतिपय साधक कितने भव में मोक्ष में जाते है?**

.....

.....

.....

.....

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - **14x3 = (42)**

(a) **सुहसायगस्स समणस्स, सायाउलगस्स निगामसाइस्स।**
उच्छोलणा पहोयस्स, दुल्लहा सुगई तारिगस्स।। गाथा का भावार्थ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

(b) **इच्चेयं ..... विराहिज्जासि। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।**

.....

.....

.....

.....

(c) **छठे व्रत में मुनि क्या प्रतिज्ञा करते हैं? समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(d) **निम्न अर्थ वाले गाथा में प्रयुक्त प्राकृत शब्द लिखिए- 1. मिथ्यात्व से उपार्जित, 2. जानता हुआ, 3. इससे वह आश्रव के द्वारों को बंद कर देता है, 4. खड़ा रहता हुआ, 5. मोर पंख से, 6. दूसरों से।**

.....

.....

.....

.....

(e) **त्रस जीवों के मुख्य प्रकार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(f) **पाँच स्थावर एवं असन्नी मनुष्य में अवगाहना द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(g) **सन्नी तिर्यंच पंचेन्द्रिय में स्थिति द्वार लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(h) **नारकी-देवों में समुद्घात द्वार समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(i) **पाँच स्थावर एवं असन्नी मनुष्य में प्राण द्वार समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(j) **नारकी-देवों में उपयोग द्वार समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(k) **चार कषायों के द्वारा होने वाली हानियों को आगमिक गाथा के माध्यम से समझाइए।**

.....

.....

.....

.....

(l) **सुदंसणस्स ..... नाणसीले। गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(m) **हत्थीसु ..... तह वद्धमाणे। गाथा को पूर्ण कर भावार्थ लिखिए।**

.....

.....

.....

.....

(n) **आराधना का स्वरूप लिखते हुए चारित्र आराधना को स्पष्ट रूप से समझाइए।**

.....

.....

.....

.....